अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

हिंदी काव्य में अस्तित्ववाद का प्रभाव (अज्ञेय एवं मोहन राकेश के संदर्भ में)

अनमोल कुमारए एम०ए०हिंदी विभागए

राजकीय डिग्री कॉलेज महमूदाबाद सीतापुर (पिनकोड़ 261203)ए

संबंध छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

सारांश. अस्तित्ववाद मूलतः पश्चिमी जगत की देन है आधुनिक हिंदी साहित्य पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है अस्तित्ववाद का हिंदी काव्य मेंउन्मुख सर्वप्रथम सच्चिदानंद हीरा नंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की रचना में देखने को मिलता है एक तरह से हम कह सकते हैं कि स्वतंत्र युग के पूर्व अस्तित्ववाद का स्वर हमें सुनाई देने लगा था। अज्ञेयने अस्तित्व के चिंतन का जो स्वरूप अपनी रचनाओं में दिखाया है उस पर केवल पश्चिम जगत के अस्तित्ववाद की विचार धारा से प्रेरित होकर नहींलिखी बल्कि मानव की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए सहज ही हृदय में उत्पन्न विचारों के अनुसार की है।अज्ञेय जी की रचनाओं में जीवन का मूल स्वर छुपा है जिसको उन्होंने मनुष्य तक पहुंचाने काप्रयासकियाहै।दूसरी तरफ मोहन राकेश की रचना 'आषाढ़काएक दिन' में कालिदास की निराशा एवं स्वतंत्रता चयन के अनुसार नहीं बल्कि आर्थिक असमानता के अनुसार उनका राज्य अभिषेक की ओर बढ़ना इत्यादि के संदर्भ में हम अस्तित्ववाद का अवलोकन कर सकते हैं।

मूलशब्द. अस्तित्ववाद का बोधएमृत्युबोध

- प्रस्तावना. अस्तित्ववाद नवयुग के लेखन के एक नये दर्शन के रूप में हमारे सामने उभरता है अस्तित्ववाद की अवधारणा पश्चिमी जगत की चिंतककीर्केगार्ड ने 1843ई०मेंदीथी। साहित्य के क्षेत्र में अस्तित्ववाद को प्रतिष्ठित एवं साहित्यिक ख्याति दिलाने का श्रेय प्रसिद्धि फ्रांसीसी विचारकज्यांपालसार्त्रकोप्राप्तहै।

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

अस्तित्ववाद फिर भी आधुनिक युग में कामूएकाफ्काएसार्त्र जैसे दार्शनिक व साहित्यकारों की वजह से ही बनकर पुष्कलहोगया। तथा इसे दार्शनिक मान्यतामिल गईसार्त्र के द्वारा इसे मार्क्सवाद से जोड़ने पर इसकी लोकप्रियता और भीबढ़ गई ।अस्तित्ववाद पर लिखी गई प्रमुख पुस्तकें निम्नवत हैं। सन 1964 ई०में शिव प्रसाद सिंह ने 'धर्म युग' नामक रचना की जिसमें अस्तित्ववाद दर्शन के संदर्भ में लिखा

सन 1968 ई०में महावीरदाधीच ने 'अस्तित्ववाद' शीर्षक नाम से पुस्तक लिखी थी। जिसमें अस्तित्ववाद की सभी पक्षों का वर्णन किया ।योगेंद्र शाही ने 'अस्तित्ववाद कीर्केगार्द के कामूतक' पुस्तक लिखी।सन 1973 ई० में कुबेर नाथ रायने'विषादयोग' नामक पुस्तक अस्तित्ववाद पर लिखी।अस्तित्ववाद का अर्थ समझने का प्रयत्न करें तो रयून्स ने कहा हैं कि"अस्तित्ववाद का अर्थ है जीवित रहने की वहस्थितिजो अन्यवस्तुओंकेसाथ होने वाले समायोजन में निहित है"1।अस्तित्ववादकी परिभाषा के संबंध में ऐलेनकामत है कि "अस्तित्ववाद परंपरागतदर्शक की दृष्टि से ना होकर अभिनेता की दृष्टि सेहैं। इस विचार पद्धति में जीवन की समस्याओं पर विचार भुक्तभोगियोंकी और होता हैं"2।अस्तित्ववाददोमहायुध्दोसेउत्पन्ननिराशाकाकारणहैं। इसके संबंध मेंडॉ०एमषण्मुखन का कथन हैंकि "पश्चिम में विश्वमहायुध्दो से उद्भूत निराशा एवं अरक्षित भावनाअस्तित्ववादकीव्यापकता के कारण बनी"3 अस्तित्ववाद दर्शन मेंमनुष्य मृत्यु काभयनहीं रखताहैंयहदर्शनस्वेच्छाअनुसारबिनाभयकेहीजीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाता हैं।"अस्तित्ववाद कीमान्यताओंमेंयहतथ्य गहराई तक निहितहैं कि निराशाए पीड़ाए अकेलापनए आत्मनिर्वासनए शून्यताए संत्राशए मोहभंगए विद्रूपताए विडम्बनाए बेचैनीए मृत्युबोध इत्यादि अस्तित्ववाद के साथ अनिवार्यता जुड़े हैं। कीर्केगार्दनेनिराशाकोहीचरममानाहैं। निराशा का प्रधान हेतुईश्वरसे आत्मअलगाव की भावना मेंहैं"4।

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

आधुनिक गद्य साहित्य में अज्ञेय जी की रचना 'शेखर एक जीवनी' हिंदी का प्रथम अस्तित्ववादी उपन्यास कहा जा सकता हैं। 'शेखरएक जीवनी' काप्रकाशन 1940 ई० में हुआ। इसका दूसरा भाग 1944 में प्रकाशित हुआ इसके पहले भाग का प्रकाशन स्वतंत्रतायुग के पहले ही हो चुका था।अज्ञेय जी का यह उपन्यास'शेखरएकजीवनी' का विषयमृत्यु की समस्याकीनींवपर लिखा गयाहैं।येरचनाएँआकस्मिकनहींकहीजासकती क्योंकिअज्ञेय ने 1911 से 1915 की अवधि में गोमती नदी में आईबाढऔर उसकी भयंकरदुरवस्थाअपनी आंखों से देखीथी।औरबादमेंअज्ञेयकाअस्तित्ववादकेप्रतिलगाव बढ़ने लगा। उन्होंने 'एकबूंदसहसाउछली' में लिखा है कि "सार्त्र का साहित्यिक अस्तित्ववाद मेरे लिए विशेष आकर्षक कभी नहीं रहा लेकिन 'इसाई अस्तित्ववाद ' और ' वैज्ञानिक अस्तित्ववाद' में मेरी विशेष रुचि रही है क्योंकि मैं समझता हूँ और मानता हूँ कि यूरोप की वर्तमान मन स्थिति और संकट को समझने के लिए इन प्रवृत्तियों का अध्ययन आवश्यक हैं"5

अज्ञेय पूर्णतया मानवतावादी कवि रहें हैं। अज्ञेय के सभी मान्यताओं और विचारों का आत्यान्तिक मानदण्डमान वही रहा है। अज्ञेय की यह अतिशय व्यक्तिवादी दृष्टि अस्तित्ववाद की देन है। लेकिन अज्ञेय के सदाय ही विचार रहें हैं कि भारतीय परिवेश में अस्तित्ववाद से भी बड़े दर्शनकीउद्भावनाकीजाये।अज्ञेयकिइसउद्भावनापररामस्वरूपचतुर्वेदीजीकहतेहैंकि"अ स्तित्ववादसेअज्ञेयनेकुछबेसिकउत्तेजनापायीहोए पर अपनेसमूचेउत्तरकालीनकृतित्वमेंलेखककाध्यानरहाहैकिभारतीयपरिस्थितियोंमेंअस्तित्व वादसेकोईबडी़औरअधिकसंगतदृष्टिविकसितहोजाये"6

शेखरअज्ञेयकीपहचान है अज्ञेय जी ने शेखर के माध्यम से ही दुःख वेदना को दिखाया है। उसके घनी भूत वेदना को केवल एक रात में

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

देखेंहुये 'विजन' शब्दकोशब्द बह करने का प्रयत्न हैं।"घोरयातनाव्यक्तिकोदुष्ट बना देतीहै" 7

घोर निराशा उसे अनाशक्तबनाकर दुष्टहोने के लिए तैयार करती है। उसकी मुंह से कहीं गई बात दर्शन का रूप ले लेती है।वैयक्तिक संकट बोध ने कामू और काफ्का जैसे महान व्यक्तियों ने चिंतन और साहित्य में गहरा प्रभाव डालाहै। यही वैयक्तिकसंकट बोध(अज्ञेयजी ने शेखर की माध्यम से दिखाया है)अज्ञेय को दार्शनिकता का घोरअहम्वादी बनादेताहै।शेखरकोगौरवकादर्शनबनादेताहै।विद्रोहितमेंअहमकेसाथ.

साथसतेस्तपरिस्थितियोंसेस्वतंत्रहोनेकीलालसाभीदृष्टव्यहैशेखरकेजीवनकादर्शनक्याहै।अ ज्ञेयकेशब्दोंमें"योंसूत्रआपचाहेतोकहदूंगास्वतंत्रकीखोजफिरआपसूत्रकीव्याख्याचाहेंगेऔर मेंकहूंगाकीवहशेखरहै"8

अज्ञेयकेदूसरेउपन्यास 'अपनेअपनेअजनबी' मेंभीमृत्युकीमंडरातीगहनतमछायामेंव्यक्ति केअस्तित्वऔरस्वतंत्रता की चर्चा कीहै।किमृत्युमानवकेअस्तित्वऔरस्वतंत्रताकोउखाड़करफेंकदेतीहै।मनुष्यकोवरणकीस्व तंत्रतानहींहैं।यामृत्युउसकीसीमाहै।वर्षकेनीचेकाठ

घरमेंफंसीसेल्मासोचतीहैंकिमनुष्यउपेक्षितनिस्सहायए निस्पायए एवंबेबसहैं।कालरुपीविराटशक्तिमनुष्यकोअवशबनातीहैऔरउसेबुढ़ापेकेअंधेरीगुफामें धकेल देती

है।उसकेविकरालहस्तसेरक्षायाउसकीगुलामीसेछुटकारासम्भवहैं।मृत्युजबचाहेआसकतीहै ।औरहमारेअस्तित्वकोउखाड़फेंकदेतीहैइसीलिएसेल्मायोकेसेकहतीहैंकुछभीकिसीकेबस मेंनहींहैं।योके।वरणकीस्वतंत्रताकहींनहींहैं।हमकुछभीअपनी इच्छा अनुसार नहीं चुनतेहैं।इस दुनिया में रहते वास्तव में मनुष्यबहुतअकेलाहैं।स्वतंत्र हे।सेल्मा कहती है "ईश्वरभीशायदस्वेच्छाचारी नहीं है उसे भी सृष्टि करनी है क्योंकिउन्माद से बचने के लिए सर्जन अनिवार्य है"9

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

औरबादमेंआखिरयोकेविप्यानकरकेउद्घोषितकरतीहैकि"मैंनेंचुनलियाहै. मैंनेंस्वतंत्रताकोचुनलिया।मुझेयादहैकभीकुछचुननेकामौकामुझेनहींमिलालेकिनअबमैंनेंचुनलियाहैजोचाहाचुनलियामेंखुशहूँ।"10

दूसरीतरफहममोहनराकेशकानाटक 'आषाढ़काएकदिन 'देखेंतोहमपातेहैंकिमोहनराकेशकीसाहित्यिकरचनाओंमेंमार्क्सवादकेविरुद्धप्रतिक्रिया हुई।जिसदर्शननेमोहनराकेशजीकेसाहित्यपरप्रभावडालावहीथाएअस्तित्ववाद।मोहनराकेशने'आषाढ़काएकदिन' कीरचनाअस्तित्ववादसेप्रभावितहोकरकीहैं।हिंदीसाहित्यकेप्रसिद्ध आलोचक डॉ नगेंद्र ने अस्तित्ववाद के संदर्भ में कहाहैंकि"अस्तित्ववाददर्शननेअपनेपूर्ववर्तीदर्शनऔरविज्ञानकीअमूर्ततापर आक्रमण किया।उसनेअपनेठोसअनुभावोतथाप्रत्येकव्यक्तिकेबुनियादीसवालोंकेसाथजोडाहै।येबुनियादीसवालहैं.व्यक्तिकीव्यग्रताएदुःखएनिराशाएअकेलापनए मृत्युबोधएस्वतंत्रताएत्रासआदि।इसके साथ हीवहसामूहिकताऔरनिश्चयवादकेविरुद्धभीखड़ा हुआ।वहउन समस्त विचारों के विरुद्ध जो व्यक्ति को अ. मनुष्यऔरअस्तित्वहीनबनातेहैं।उसकीदृष्टिमेंमनुष्यस्वतंत्रहै।वहनवस्तुहैन मशीनहैवहक्रियात्मकशक्तिहैवहस्वतंत्र निर्णय लेने में समर्थहै।औरइसकेलिएवह खुद जिम्मेदार है"11

उपयुक्तकथनकेअनुसार'आषाढ़काएकदिन'तुलनाकरेंतोहमइसनाटकमेंनिम्नलिखिततत्व पातेहैं।इसनाटककानायककालिदासहैंवहस्वतंत्रनिर्णयलेनेमेंअसमर्थहै।वहनचाहतेहुयेभीउज्जयिनीकोजाताहै।उसकीइच्छाहैकिग्रामीणपरिवेशमेंरहकरमल्लिकाकेसाथरहेंअपितुआर्थिकअभावसामाजिकतिरस्कारजैसेमनोभावउसेगलतनिर्णय;उज्जयिनीजानेकेलिए)प्रेरित करतेहैं।यहाँउसकेजीवनमेंविसंगतिबोधकीसमस्याउत्पन्नहोतीहै।औरकालिदासनिराशाएहताशभरेशब्दोंमेंकहताहैकि"अधिकारमिलाएसम्मानबहुतमिलापरन्तुमेंसुखीनहोसका३३मुझे

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

बारबारअनुभावहोताकिप्रभुताऔरसुविधाकेमोहमेंपड़करइसक्षेत्रमेंअनाधिकारप्रवेशकिया हैं।जिसविशालमेंमुझेरहनाचाहिएथाउसेदूरहटआयाहूँ।"12

येविसंगतियाँकालिदासकेजीवनमेंनिरन्तरचलनेवालीछटपटाहटहैं।कालिदासएकतरफगाँ वकीआत्मीयताचाहताहैतोदूसरीतरफसत्ताऔरसुविधाकाभोगभीचाहताहैं।इससन्दर्भमेंका लिदासकाकथनहैकि"मैंअपनेकोआश्वासनदेताकिआजनहींतोकलमैंपरिस्थितियोंपरवशपा लूंगाऔरसम्मानरुपसेदोनोंक्षेत्रोंमेंअपनेआपकोबाँटदूँगा।परन्तुमेंस्वयंहीपरिस्थितियोंकेहाथों बनताऔरचलितहोतारहा।जिसकलकीमुझेप्रतीक्षाथी।वहकलकभीनहींआयाऔरमेंधीरे. धीरेखंडितहोतागया।औरएकदिनमैंनेंपायाकिमेंसर्वथाटूटगयाहूँ।"13

कालिदासप्रेमकेलिएजबसत्ताकोछोड़करआत्मीयताकीखोजमेंगाँवआताहैंतोयहदेखताहैं किमल्लिकानेअपनेआपकोविलोमकेप्रतिसमर्पणकरचुकीहै।औरअबकालिदासकेहाथोंसे दोनोंचीजेंनिकलगयीहैं।इसतरहसेलेखकनेनिराशाए

अकेलापनइत्यादिअस्तित्ववादकेतत्ववर्णितकियेहैं।

निष्कर्ष.

अज्ञेय ने भारतीय संस्कृति के मृत्यु सम्बन्धी विचारोतथादाहसंस्कारआदिकेमाध्यमसेभीजीवनऔर सृष्टि की अनवरताकादर्शनप्रस्तुतकियाहैं।व्यक्तिभारतीयचिंतनमेंमृत्युकोजीवनकाअन्तनहींबल्कि नित्यप्रवाहकेएकअंशकेरुपमेंसमझसकताहै।औरअपनेजीवनकोसुखीबनासकताहैं।यहाँअ ज्ञेयनेस्वतंत्रताकीसीमाकीऔरहमाराध्यानखींचाहैअज्ञेयनेमानवकीइसबेबसीकीअभिव्यक्ति दीहै।किमनुष्यकोवरणकरनाहीपड़ताहैं।चाहेवहमृत्युहीक्योंनहोक्योंकिमानववरणकेलिए अभिशप्तहैं।अस्तित्ववादनेमनुष्यकोजीवनजीनेकेलिएएकनयास्वरूपप्रदानकियाहै।दूसरी तरफमोहनराकेशने'आषाढ़काएकदिन' मेंकालिदासकेमाध्यमसेसत्ताएवंसर्जनात्मकताके मध्यअन्तःसंघर्षकाचित्रअंकितकियाहैं।यहकेवलकालिदासव्दंव्दनहींबल्किआधुनिकमानव काभीअंतरव्दंव्दहैं।कालिदासएकऐसासृजनशीलकविकाप्रतीकहैंजिसकीसृजनशीलताव्य वस्थाकेव्दाराकुचलदीजातीहै।

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

संदर्भग्रंथ

1- डीडीरयून्सएदडिक्शनरीऑफफिलॉसफीएपृष्ठसंख्या 102

2- सं०डॉ०धीरेन्द्रवर्माए हिंदीसाहित्यकोशएभाग१एपृष्ठसंख्या 73

3- डॉ०एम०षण्मुखनए आधुनिकहिंदीउपन्यासोंपरअस्तित्ववादकाप्रभावएपृष्ठसंख्या355

4- डॉ०कृष्णदत्तपालीवालए हिंदीआलोचनाकेनयेवैचारिकसरोकारएपृष्ठसंख्या383

5- अज्ञेयएएकबूंदसहसाउछलीएपृष्ठसंख्या 70

6- डॉ०रामस्वरूपचतुर्वेदीए हिंदीसाहित्यकीअधुनातनप्रवृत्तियाँएपृष्ठसंख्या05

7- अज्ञेयए नदीकेव्दीपएपृष्ठसंख्या07

8- अज्ञेयए आत्मनेपदएपृष्ठसंख्या 67

9- अज्ञेयए अपनेअपनेअजनबीएपृष्ठसंख्या 98

10- वहीपृष्ठसंख्या 101

11- सं०डॉ०नगेन्द्रएवंडॉ०हरदयालए68वाँसंस्करणएहिंदीसाहित्यकाइतिहासएपृष्ठसंख्या 416

12- मोहनराकेशए आषाढ़काएकदिनएपृष्ठसंख्या 99

13- वहीपृष्ठसंख्या 100